

“ महिला सशक्तिकरण प्रतृसात्ताभन्ड इस्तम्बोप और
व्यक्तिगत स्वामत्ता व स्वतंत्र चुनाव के बीच
तनाव की छल करने में निहित है । ”

इस में शादी की रीनक है, बारात कुछ ही देर में
प्रस्थान करने वाली है । परन्तु १६ वर्षीय सविला
जिसकी शादी है वह निराशा के अंहोरे में भेठी है ।
इरआसल, सविला ३०पी० जे० आधिकार कलाम (मिसाइल
में) को अपना आदर्श भानती है और वैज्ञानिक
वनना चाहती है । परन्तु उसके पिला विना उसकी
मर्जी के उसकी शादी उस व्यक्ति से तम कर दी
थी जिसे ना ली उसने देखा है ना उसके बारे में
कुछ जानती है । परन्तु दूसरा इरांडा शादी के मंडप
में लगता है जब वह ५० वर्षीय वृद्ध व्यक्ति की
अपने जीवनसाथी के रूप में देखती है । तीसरा
इटका उसे शादी के बाद लगता है जब उसे पता
चलता है कि उसके शराबी पिला के उसे कुछ
चपमो के लिये उसे उस वृद्ध व्यक्ति को बेच
दिया था ।

उज्जबल मविष्य का जो सपना सविला ने देखा
था वह प्रतृसात्ताभन्ड इस्तम्बोप के कारण हराशमी
हो चुका था । व्यक्तिगत स्वामत्ता व स्वतंत्र
चुनाव का जो अधिग्रह उसे ओलिक रूप से
(ओलिक अधिग्रह) प्राप्त था वह फ्रतन्त्रता की
जंजीरी में अफ़ड़ चुका था ।

सतिता की तरह न जाने कितनी महिलाओं के सामने
और उम्मीदें पितृसत्तागमक हस्तक्षेप के आरण छुटने
हेके देते हैं। ये भारत जैसे देश के सिवे
महान् पिंग विरोधाधारा दी है जहाँ एक तरफ
बेटी को लकड़ी का दर्जा दिया जाता है वही दूसरी
तरफ अक्षरी को जर्बी में मारने पर ये समाज
संकेत नहीं करता। इसी तरह बेटियों की शिक्षा
के सिवे अबसर धन अभाव की दुर्दशी देने
वाले अग्रिमावडु दहेज के रूप में द्वेरा धन
देने में संकेत नहीं करते हैं। बेटियों की शिक्षा
में भी ऐसी इसलिये निवेश ताकि उन्हें एक
पढ़ा-लिया पर भिल सके। ऐसिये समानता प्राप्त
करने में सबसे बड़ी विद्युता यह है कि यह
धोदमाव लोगों के अस्तित्व पर इस तरह हावी है
कि ये धोदमाव प्रत्यक्ष छोड़ भी अदृश्य हैं।

पितृसत्तागमक हस्तक्षेप की ये जैसे हमारे
इतिहास के उन पन्नों में दर्ज हैं जहाँ से
मानव ने विष्णु के नाम अपनी उपस्थिति
दर्ज करानी शुरू की। ३० शुवास जोड़ा हरारी
ने अपनी पुस्तक 'सेपियन्स' में इस वातमा
का जिक्र किया कि नवपाषाण शुग में कुछ
के अविष्कार ने ऐसिये विमाजन की लैंगिक

विभाजन में लदलने व शाश्रीरिक अग्नि में पुस्तकी की सर्वोच्चता को स्थापित करने में दृग्गिरा निभाई। त्रट्ट्वैरिक काल में यहा अहिलाद्वी को समा-संग्रहि में आग लेने की अनुमति थी वही उत्तर त्रट्ट्वैरिक काल व अहाजनपद काल के व्यापार व उष्णि के बढ़ी अहत्या के अहिलाद्वी को छोड़े गए सीमित कर दिया।

महायकाल ने सांभरी व अबीरी के वर्चस्व के बीच शक्ति के केन्द्रीयरूप की प्रतिस्पर्धा के बीच अहिला नेतृत्व (अजिमा सुल्तान) की साजिष्ठा व वंदिशी का सामना करना पड़ा। अहिलाद्वी की पितृसत्तामुखी सत्ता के अधीन इयानी के द्वितीय पुस्तक के साधन बनी। अल्ला यहा भी अहाजन लिंग विरोधाभास देखने की विजय है यहा एक तरफ अनुसन्धृति में "यत्र नार्मस्तु पुज्यते, तत्र रमन्ते देवता" ले दूसरी तरफ अनुसन्धृति अहिलाद्वी का प्रमुख कर्तव्य परि की सेवा की बतामा साध ही "न स्त्री र्वत-भर्त्ति" अर्थात् स्त्री की र्वतव्याला नहीं दी जानी चाहिये कि वहालत करता है।

इसी तरह छार्म के नाम पर सम्बन्ध सम्बन्ध पर अहिलाद्वी अवित्तगत र्वतव्यता व र्वतव्य चुनाव के अहिकार के दबाने की ओरिशा की जमी। उठी उनके र्जोनिवृत्ति के प्रातुरिक स्थिति में अन्तिरों में प्रवेश निषेध कर 'अस्पृश्यता' का गवाहार

किया गया तो कुम्ही उनके प्रवर्साम करने के अधिकार
की अपेक्षा की हुई से देख अपमानित किया है जगा।
सुप्रीम कोर्ट ने सबकीभावा केस में भासिक धर्म के
कारण अद्वितीय में ऐसा निशेष आमु की अहिलामी के
प्रते वे निषेध करने के अस्पृश्यता की प्रवहर
की संक्षा है। जो व्यवितरण स्वामता व अवतंत्र
चयन के अधिकारी का हनन करता है।

इसी के साथ हुए ऐसी इत्र हैं जहाँ अहिला
प्रगति से सम्बन्धित विविधाभास दिखलाई पड़ते हैं
ऐसे तरफ जहा अहिलामी की साझारता दर, सखल
नांगान अनुपात, उच्चरिक्षा में बढ़ोत्तरी हो रही वही
आर्म इत्र में सीमित भागीदारी अभी भी समर्थ्या है
जिसका कारण पिंसत्तात्पत्र सोच 'पढ़-सिख कर तो
उन्हें इसके के बर जाना है' है जो खेटियों के
भविष्य निर्णय की जगह वंश निर्णय की ज्ञान
महत्वपूर्ण आनंद है।

वही हुए इत्र में अहिलामी की भागीदारी आवश्यक
की गई में सर्वाधिक दिखलाई पड़ती है परन्तु ऐसे
रिपोर्ट के अनुसार लगभग 12% सम्पत्ति ही भी का
अधिकार है। अहिलामों के पास

इसी के साथ सेवा इत्र में निजी इत्र की आवश्यक
भी अहिलामी की नियुक्ति से बचते हैं। अमोंगे

मेट्रोनिली दीप, पीरिगाड़ लीला, केना की व्यवस्था आदि
की के उत्पादन में बाह्यक की तरह देखते हैं। तो
सभी श्रीत्रकों की जो अगर नकार छी तो जीति
निर्माण के अन्दर 'संसाद' में अहिलाटी का प्रतिनिधित्व
निराशा करने वाला है जहाँ 18 वीं लोकसभा में 545
सदस्यी में आज 74 अहिलाट (13.6%) चुनी गयी
वही चुनाव आगीदारी में उनका प्रतिशत 65.8% था
जो पुरुषों से 0.2% उमादा था। इसी के साथ पर्वामती
राज संस्थाओं में इनके सशब्दितकरण हेतु 33% सीट
आरक्षित की गयी परन्तु 'संपन्नपति' के डाकघारणा
में इनकी व्यक्तिगत स्वाभावित व सम्बन्ध स्वतन्त्र वर्ग
पितृसत्तात्मक दृस्तज्जीप के आह्यन से फिर बाधा पहुँचाई।

इसलिए अहिला सशब्दितकरण में पितृसत्तात्मक दृस्तज्जीप
व व्यक्तिगत स्वाभावित व स्वतन्त्र चुनाव के बीच
तनाव की 'व्यक्तिगत रूजीसी व पसंदजी' के
आह्यन से हेठ करने की आवश्यकता है जहाँ
सशब्दितकरण का प्रमास बानून, संस्था, और जीसी
डरा जही बत्ति अहिला के स्वनेतृत्व में प्रमास
की आवश्यकता है। किसी भी व्यक्ति के अन्वर
मूर्खी के निर्माण के लिये 3 संस्थाएं जिम्मेदार होती
हैं - परिवार, स्कूल, समाज। सर्वप्रथम परिवार
जिसे गांधी जी 'ने कहा है -

“ बच्चा जन्म के समय एक बाली रुग्नापूर्ण की खाँति होता है जिस पर शूल का पहला पाठ परिवार डाका सिखा जाता है।”

परिवार में समाज संसाधनों का वितरण विना ऐंगिन धोदबाव के, धरेष्ट्र कार्य विभाजन का बोझ सिर्फ स्त्री नहीं बल्कि सभी का कावर चोगदान ही, समर्पणपूर्ण समाज की स्थापना ‘समानतापूर्ण परिवारित आदेष की स्थापना’ आवश्यक है। प्रस्तिहृष्ट लेखिका सिनीन द बोउरा का उत्तर “स्त्री वेदा नहीं होती, बल्कि वनर्षी जाती है।” में निहित धाव की समस्या होगा व समता, स्वतंत्रता व्याप्ति के आधार पितृसत्तानक दृष्टिकोण की समाप्त कर अवितरण स्वाभाविता व स्वतंत्र चुनाव की सुनिश्चित उन्नता होगा।

अहिलासी की स्वभाव निर्जीव अवतार व आत्म-विश्वास का निर्भाण ‘स्वभाव के विश्वास के लिये’ एक ‘अवितरण संजीवी की’ लक्ष्य कार्य उन्नता होगी वाधासी की दूर कर अवसरों की तलाश उन्हीं होगी जिसका जीवित उदाहरण औषधिक स्वर्ण पदक विजेता भेरी गोंद है जिन्होंने जीवन की जटिल वाधासी के दूर कर अवितरण संजीवी का कार्य किया।

इसी की भाषा समाज से ऐसी उरीतियों की दूर उनके का प्रयास उन्नता-वाहिका जो आनंद

व्यक्तिगत सेवामतला व स्वतंत्र चुनाव की अविलम्ब
करता हो व पितृसत्तामबद्ध हस्तक्षेप को बढ़ावा देता
हो। उदा० साँ फुर्जागरण, के प्रणेता राजाराम
गोहनराम ने सालीप्रथा की समाप्त करने के लिये
एक सम्बाद प्रयास कर अहिंसादी की व्यक्तिगत
सेवामतला व स्वतंत्र चुनाव की संरक्षित किया।

फलतु यहाँ जैर करने की बात नह है कि
अहिंसा सशक्तिकरण के लिये किया गया प्रयास
स्वयं अहिंसादी के प्रयासी वे निष्क्रियता भाल हैं
जिन एक सम्बाद प्रयास इस प्रयास हेतु सक्रियता
के के साथ मार न से। उदा० के सावित्री बाई
झुले जी वा अहिंसा शिक्षा हेतु प्रयास अहिंसादी
में स्वनितृत्व की प्रेरित करता है। इसी के साथ
राजनीतिक अधिकारी डी.सी.एसी. अरोजनी नामक
उषा जेहला जैसी अहिंसादी द्वारा स्वयं की गयी।

इसलिये हम अनुरागात में प्रवेश कर
चुके हैं जहा 'अहिंसा सशक्तिकरण' की ओवधारणा
अब पुरानी ही चुनी है जिसमें संशोधन की
आवश्यकता है औह इसे 'अहिंसा नेटून' में
'सशक्तिकरण', बनाने की जरूरत है लाभि
'हम भारत के लोगों' की एक समृद्धी प्रभुत्व

सम्पन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतन्त्रिक
गणराज्य के लिंगनिरपेक्ष व्याय, स्वतंत्रता,
समता उपलब्ध कराने के साथ पितृसत्ताभक्ति
हस्ताक्षीण की समाप्त कर महिला नेटवर्क सशक्तिग्रह
के आहयन से प्रवित्त रूपताता व रूपता
चुनाव के अवसर प्रदान कर सकें।

इसी के आश्रित समाज का निर्माण
करे जहां —

- आइये हम नारीवाद का वेश्वीकरण करें।
- आइये हम कर्मणा की कर्मीता प्रदान करें।
- आइये हम लिंगव्याय का वेश्वीकरण करें।
- आइये हम समावेशी समाज की प्राप्त करें।
- आइये हम समतावादी समाज की स्थापना करें।
- आइये हम रूँजीसी उठियोग की अपनाए।

और 'सपित' ऐसी वासिताओं के निराशा
के अंधेरे को दूर कर प्रवित्त रूपता व
रूपता-चुनाव के अवसर प्रदान कर एक
वेहतर अविष्य के निर्माण डारा विकसित भारत
@ 2047 के लक्ष्य की प्राप्त कर सकें। सकते हैं।

“ ऐगिड न्याय का सार जीवित मिन्नताजी से ऊपर
उठ कर समानता और सशक्तिकरण के लिए सार्वजनिक
मानव अभिलाषा को पहचानने से है । ”

‘कॉल’ फ़िल्म का प्रसिद्ध उँचायाग ‘महारी बिरिया देसे
से क्या हैं के’ जो छोगाट बहनों की संबंध से सफलता
की कहानी बर्चां करता है इसी के साथ जीवित मिन्नताजी
से ऊपर उठ कर समानता और सशक्तिकरण की वकालत
करता है से सम्बन्धित एक ऐसी कहानी भेरठ की
बबली की है जो बचपन से कुशली में उपना भैरियर
बनाना बाहरी थी परन्तु जब यह बात जाववासी के
सुनी तो उन्होंने उसके पिला से कहा — लड़की और
कुशली ? यह असमंजस है लड़कियों को सिर्फ भेरू
जान सिखा दी और शोटा बहुत पढ़ा - सिखा कर
थाह कर दी वह अपना ससुराज सम्भाल ले
यही बहुत है ।

परन्तु बबली कहाँ स्कूले वाली थी उसने अपने
अपनी की जिद बनामा और भोगी के लाली को
प्रेरणा । वह दिन रात अव्यास करती और उसकी
शबला की पहचान उसके कीच ने की । उसके कीच
ने उसके पिला से कहा — आप क्वेल बिरिया की
चुराकी का द्यान दीजिए अपनी बिरिया एक दिन
आपका नाम शोकान करेगी ।

एक अच्छी डाइट व कीच के संरक्षण में बबली
पर शाष्ट्रीय व एक्सिमिड खेती में जोड़ मैडल जीत

एक सारकरी ओहुगे रों स्पोर्ट्स आफिसर वन जमी।

बवली की कहानी उन ऐविड मिन्नताडी से
ऊपर उठकर सागानता व सशस्त्रितकरण केन्द्र की
प्राप्त कर लैंगिड नगांग अधिकार उरना था परन्तु
बवली की कहानी जे हमारे समाज के सामने
कई प्रश्न खड़े कर दिये कि आखिर ऐविड
मिन्नताडी को हमारे समाज में एक अपरोधक
के रूप में क्यों प्रयोग किया जाता है? क्यों हमारा
समाज बच्चों में लैंगिड व ऐविड मिन्नताडी के
आधार भेदभाव उत्तर है लड़कों की खाना बनाना
आना आदि लड़कों को श्याम किंकुट खेलेगा,
राधा खाना पकायेगी ऐसे वकल्प व्यवपन से
बच्चों में डाल दिये जाते हैं।

मनोसामाजिक विश्वेषण विशेषक अस्ट्रीट
बुड़ा की आने तो बच्चा 'रोस लैंडिंग' प्रेक्षणात्मक
अधिगम के आहमम से भीखला है आता खाना
बना रही व पिल आफिस जा रहे थे कार्यविभाजन
का ऐविड मिन्नताडी का अंग वन जमा हमें
इसका आभास ही नहीं हुआ।

परन्तु मे कार्यविभाजन वर्तमान परिदृश्य
के साथ एक ऐसे ऐतिहासिक गर्भ से निकला
है जिसके दर्शन हमें पाजांग मुग से ही

दिखलाई पड़ता है। अब पुस्तकी के शारीरिक रूप अधिक अणवूत, निर्माण आदि के अवश्य अनुपस्थि करने, व्योमपाद संग्रहण करने का कार्य पाषाण मुग के शिकार करने, पत्थरों की कटनी आदि का साध्य पुस्तकी के पक्ष के दिखलाई पड़ा है की अहिलाए बच्चों के देखभाल के धोजन पठाने का कार्य में व्यस्त दिखलाई पड़ती है क्या इस कार्य विभाजन का आधार जीवित मिन्नता थी? यदि लक्षित विशेषण के ले अहिलाएँ की पुस्तकी से अलग गर्भाधारण की प्रातुलिष्ट कमता प्राप्त है जिसके कारण ७ महीने अहिलाओं की जड़ीबे शारीरिक अवकरने में उठिनाई का सम्भवा करना पड़ता है। शामद यही कारण रहा होगा जिसने अहिलाओं की छारों में सीमित किमा होगा परन्तु क्या ये लेंगिड अन्याय, असमानता व अस्त्रितता की किसी लिंग पर धोपने का सही असर वैष्ण कारण ही सकता है?

सभस के साथ यह अन्याय बढ़ता जाया अहिलाओं की वैदिक उत्तरवैदिक में समा व सनिति जैसे भुख्य संस्थाओं से अलग किमा जाने लगा यहाँ तक शास्त्री ने भी इसे बढ़ावा दिया। मैत्रीय संहिल में अहिलाओं को शराब व जुरू के बाद लीस्ता दीब पुस्तकी के सिरे समझा जाने लगा। यहाँ तक की वैष्ण धर्म,

३

जैन धर्म जैसे धर्मों में सभी के प्रवेश का निषेद्ध
था ।

जैविक भिन्नताओं से अपने में असमानता
भृत्य इतिहास में तब देखा गया जब राजनीति
की वागड़ेर अहिला के हाथों में (रजिया सुल्तान)
देख पुरुष अमीरी डारा + सालो के न्यूनतम् सालो में
तख्ल पलट कर दिया गया । अहिलाभी की विशेषताओं
की शब्दावली में कीमत, सीदर्द जैसे शब्द व
पुरुषों में शूरवीर, निष्प्रीक्ता जैसे शब्द शब्दावली
का अंग बन गए ।

फरक्तु जब-जब अहिलाओं के जैविक भिन्नताओं
में ऊपर उठकर इतिहास रचा वदसे में उन्हें
'भर्दीनगी' औरी उपाधि से सुसज्जित किया
जात है । १८५७ की क्रान्ति की भरान वीरांगना
धर्मीवाई जो मुहूर द्वेरा में अंग्रेजों से लड़ते हुए
वीरगति की प्राप्त ही जमी के सम्बन्ध में अंग्रेज
लेंग छोर का प्रसिद्ध लघन - "१८५७ के विद्रोहियों
में एकमात्र भर्दी थी ।" यह संकुठी भानसिकुल
हमें अपने साहित्य में भी दिखलाई पड़ती है
फरक्तु आश्चर्य इस बात का है कि क्स ओर दूसरा
हृयान ही नहीं जात । सुमन्त्रा कुमारी-चौहान की
प्रसिद्ध कविता 'खुब लड़ी भर्दीनी वो तो झाँसी'

वासी शानी श्री, एक भृतिला के शोर्प को पेंगल
शोर्प की उपमा क्या क्या किसी एक सिंह की
सर्वोच्चता का परिचायक नहीं है? प्रसिद्ध साहित्य
- कार सिग्नी-न द बोउमार ने, 'सद सोउड सेस
में कहा "कोई स्त्री ऐसा नहीं होती, जिसकी
बनती है।"

परन्तु बदलते हीर और वैश्वीकरण के
प्रभाव ने जीविक मिन्नलाजी के मिथक को
तोड़ समानता, स्वतंत्रता व व्याप के मूल्य
स्थापित किये साथ हर सिंह को अपनी क्षमता
पहचान कर वह अवसर उपलब्ध कराये जो
उन्हें संशक्त कर आन्मिकास का संचार
करे।

भारत के सन्दर्भ में कैखी तो स्वतंत्रता
शब्द जब भारत में भृतिलाजी को छोड़ बाहरी
लक्षणित कर दिया जाता था तब कांग्रेस
के अंद्रास अधिकेशन (1889) में कादम्बी-गाँगुली वंश शानदार भाषण के द्वारा साक्षितकरण
का परिचय दिया। ये हीर यहीं नहीं थमा
आगे भी सावित्री बाई फुले, सरलादेवी चौहरानी
सरीजनी नायडु, वीना दास, उषा गेहला जैसी
भृतिलाजी स्वतंत्रता आनंदीलन में उत्तेजनीय

प्रशासनिक द्वीप में महिला सशम्भव के
भागने भारत की पहली अधिसा आईडी०एस०
किरण बेदी ने 'जेविड मिन्नल' के ऐतिहासिक
गिरफ्त 'को लोड इतिहास' रचा। इसी के साथ
STEM जहा भारतीय अद्वितीय 43% रक्तात्मक
हैं जो दुनिया में सबसे अधिक हैं में भी भारतीय
भविष्याएँ परचम लहरा रही इसका लासिया उदास्त
चन्द्रयान - 3 का नेटूरूप करने वाली व राष्ट्रीय
पुगन के नाम प्रसिद्ध ३०प्र० के लखनऊ की
जिल्ही जिनके नेटूरूप भारत चन्द्रयान के दक्षिणी
ध्रुव पर लौटिग करने वाला पहला देश हो गया।

इसके असावा जेविड मिन्नल के जरूर
एयरफोर्स के लड़ाकू जीज अद्वितीय से लग्जरी समय
तक अद्वृते रहे हैं परन्तु अपनी चतुरेदी, भावना
कुण्ड के जोहना सिंह ने इस जिम्मे को लोड अपनी
कामला पहचान लैंगिक व्याप को स्थापित कर
अनेक अद्वितीय के लिये प्रेरणास्त्रीत की।

जेविड मिन्नल के नियम को लोडने में
अद्वितीयों ने खूब भोगदान दिया परन्तु पुरुषों
की धूमिया भी एकात्मीय हैं। एक तरफ
इतिहास के जहाँ राजाराम जोहन के सती प्रणा
की समाप्त कर अद्वितीय आनंद कामला की

पहचान की वही लेंगिडू व्याप सुनिश्चित किया। ईश्वर बन्द्र विद्यासागर ने विद्यावाही की समानता व सशक्तिशुल्क सुनिश्चित करने हेतु विद्या पुनर्विवाद की बातें की।

इसी के साथ सोबाल मीडिया पर गहान किंडेस्ट विराट कोहली तब वायरल हो गए जब उन्होंने अपने बच्चे की देखभाल के लिए प्रेरणलतीष की आँगठी। यह आँग नर दृष्टिकोण का परिनाम था जहा लैंगिडू भिन्नता लैंगिडू समानता की तरफ बढ़ रही थी। प्राहुदिक सीमार लाव किस्तार की तरफ बढ़ रही थी तो वद्याव का संकेत न केवल अदिलाहों अपितु सार्वभौमिक भानवीय कल्याण सुनिश्चित करेगा जिससे लैंगिडू व्याप के सार सार्वभौमिक भानव द्वामता की पहचान समानता व सशक्तिशुल्क की सुनिश्चित करेगा। इस सम्बन्ध में एक उमि की चार पंक्तियां प्रांसिङ्ग अतीत होती हैं—

“जिंदगी की असली उड़ान अभी बाढ़ी है,
जिंदगी के उई बिल्हान अभी बाढ़ी है,
अभी तो जापी है अृढ़ी भर जगी हमने
अभी तो सारा आसान बाढ़ी है।”

अस्तु अवली

लिंग की सामाजिक संरचना के नुस्खों के देखरेख प्रक्रिया
स्वतंत्रता और स्वाभाविता के आधार से साशक्तिकरण को
दर्शनिक हृषि से समझने का प्रयास

भारतीय समाज की एक प्रमुख संस्था, "विवाह"
समाजीह का एक दृश्य - चारी तरफ तेमारी की
प्रस्तुति, सभी अपने - अपने जागी में प्रस्तुत।
उर की महिलाएँ शादी के पड़वानों के निरीक्षण व
रंगारंग धार्मक्रमों में प्रस्तुत वही दूसरी तरफ पुरुष
मेहमानों की सिस्ट, वाहन की प्रवस्था, केंद्र के उन्नी
से दोनों के लोखा - जोखा में प्रस्तुत। देखने में
ले में साधारण दृश्य प्रतीत होता है जो आपको सामाजिक
उर बरों में दिख जायेंगे, परन्तु जो प्रश्न उचित कर
सामने आ रहा वह प्रश्न है कि क्या तो लिंग की
सामाजिक संरचना पूर्व निर्धारित है? क्या इस
वैमिक विभाजन ने हमारी अस्थिति पर इस तरह
से क्षया किया है कि ये विभाजन प्रत्यक्ष दोबुर
मी अहृश्य हैं जहाँ वैशिष्ट्य स्वतंत्रता व स्वाभाविता
प्रतिबन्धित होने के बावजूद स्वतंत्र दिखलाई पड़ती हैं

इन सभी प्रश्नों पर विचार करने से पूर्व हमें
लिंग की परिमाणा समझनी होगी इसी के साथ इसके
सामाजिक संरचना के साथ सम्बन्ध की समझना होगा
तापश्चात् इसका अवित्तगत स्वतंत्रता व स्वाभाविता
पर प्रभाव का मुख्यांकन दर्शनिक हृषि से उन्ने के
साथ विभिन्न पक्षों पर चर्चा डारा इसी समझने

का प्रयास किया जाएगा ।

सर्वप्रथम 'लिंग' के बारे में ऐतिहासिक लघु नहीं बल्कि समाज द्वारा एक निर्भित संरचना है जिसके आधार पर इसे पुरुष, स्त्री व अन्य में बाँटा जाया है परन्तु उन संरचनाओं ने प्राचीन जाति से वर्तनाम समझ लक्ष इन लिंगों की तुष्टि धूमिकाओं कुर्तव्यों व अपेक्षाओं में बाँटा है । उन धूमिका व अपेक्षाओं में जहा एक तरफ़ पुरुषों की पालनकर्ता संरक्षणकर्ता व सुरक्षात्मक उपचरण की स्थानीय दी वही अद्वितीयों की घरेलू जिम्मेदारी, आश्रिता व सेवा है प्रेरित किया । अद्वितीयों की विवासाय में गिरी भी जिम्मेदारियों ने उन के बारे में उन्हें कुर्तव्यनिष्ठ बनाया बल्कि त्याग, अस्त्रणा व अभृत्व के द्वारा प्रक्रियात्मक स्वतंत्रता व एवामता के बलिदान की प्रेरणा दी । प्रसिद्ध अधिकारी सिंगोन द लोडर के शब्दों में, " कोई स्त्री मैदा नहीं होती, बल्कि बनती है ।"
(द सेकेंड सेक्स)

अस्तित्ववादी, हिन्दूओं पर विचार करें जिनके अनुसार अनुष्य को अपनी पहचान अपने जामीं और चुनावी के आध्ययन से बनाया है ना कि समाज द्वारा थोरी धूमिकाओं से । परन्तु लिंग

की सामाजिक संरचना ने फूसष व महिलाओं के कार्य क्षेत्र जन्म से शुरू ही निहारित कर दिया है। उद्घाष्टण के लो 'राष्ट्र वर्तन होगी व इतना कबड्डी खेलेगा' ऐसे विचार बचपन से संस्कारों की आड़ में परोसे जाते हैं, राष्ट्र कबड्डी खेलना चाहती है भावही अलो किसी ने शुरू ही नहीं।

सिंग की सामाजिक संरचना ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वाभाविता के इस तरह निपत्रित कर दिया है सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्रों में महिलाओं की आगीकारी अत्यन्त सीमित है। हाल ही में दुर्घटनाएँ चुनाव में महिलाओं प्रतिनिधि की हिस्सेदारी मरज 13.6% तक सिमट गयी।

स्वतंत्रता से अमृतकाल में प्रवेश तक यह हिस्से दारी जैगिक सामाजिक संरचना की रक्षित अजगृति की प्रवर्शित भरत है जो वर्तमान चुनोली के रूप में छढ़ी है। इब चुनोलियों से निपटने के लिये जारी वर्द्धन अधिनियम २०२३ द्वारा चुनोली से निपटने का वित्त

के लिये यह संसद द्वारा पारित निया गया जिसका उद्देश्य संसद में **[जारी समावेशन]** के माध्यम आधी आवादी की सशक्त बनाना है।

वही इनकी आर्थिक हिस्सेदारी के आड़े योग देने वाले हैं जहा वेरिएट ओस्ट ५३% हैं वही

भारत में PLFS रिपोर्ट (2023) के अनुसार इनकी हिस्सेदारी 37% है जो वैशिष्ट्य औसत से बहुत ऊपर है।

सिंग के आधार पर समाज डारा श्रीपी गयी शुभिका ने न केवल अदिलाढ़ी की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक दोनों में भागीदारी सीमित की अपितु स्वतन्त्रता, सवला व स्वाभाला से भी वंचित कर दिया। उदाहरण के रूप 2012 के दिसंबर की तात में निर्मिया के साथ हुई करिकटी न केवल आनवला की शर्मिशार किसां कल्पि प्रूजचैनल पर निर्मिया के स्वतन्त्रतापूर्वक धूमने पर प्रदूषनचिह्न जे अर्मादा की सारी सीमाएँ पांच दी। इसी के साथ ही प्रदूषन क्या स्वतन्त्रतापूर्वक विचरण (अनुच्छेद 19) सिंक पुस्तकी की प्राप्त है? क्या शाम 7 बजे तक पड़कियों को घर में समीरना हमारी सुरक्षा व्यवस्था है?

उदारवादी हृष्टिकीय के अनुसार अत्येक्तु व्यक्ति की अपनी जीवन के निर्णय लेने वा अधिग्रह लेना याहिर यह लिंग, जाति, धर्म पर आधारित नहीं होनी चाहिए। ऐसुर्मट गिल की पुस्तक THE SUBJECTION OF WOMEN में इन्होंने कहा है— “स्त्रियों की पुस्तकी की तरह स्वतन्त्रता व समानता का अधिग्रह है।” ऐस्तु सिंग पर-

आधारित सामाजिक संवचना ने इन वैश्वितक
स्वतंत्रता व स्वायत्तता के सिर्फ उत्तरोदय का कार्य
किया है।

परन्तु विश्व में ही ही पुर्णजागरण व
वैश्वीकरण परिवर्तन के सम्बन्ध महिलाओं में वैश्वितक स्वतंत्रता के स्वायत्तता के सिर्फ माँग की हुँगर
भरी। नारिवासि नारीवादियों ने इस लिंग की
सामाजिक संवचना की चुनौती देते हुए विट्सला
ग्नाथ सोच व लैंगिक भेदभाव के सिर्फ ता विरोध
किया। परन्तु इन सब के सिर्फ नारी ता
शैक्षिक सशक्तिकरण अत्यन्त आवश्यक आ नेस्सन
मेंडला के शब्दों में कहे, EDUCATION LIKE A
WEAPON जिसका प्रयास भारत में सावित्री वर्ष
फुर्स डारा किया फिर डांडियां गांगुली सरीजनी
नायडु जीसी सशक्त महिलाओं ने राजनीति के
अपनी उपस्थिति दर्ज की व संविधान निर्माण में
इ. महिलाओं ने लैंगिक संवचना के वाधालों को
इराजसंविधान निर्माण में अपना भोगदान दिया।

'संविधान' जो एक अनुनी इस्तमापेज है
'भारत के लोगों' का संरक्षक है। जिसने
लैंगिक सामाजिक संवचना की चुनौती देकर

'हम भारत के लोगों' की 'न्याय', स्वतंत्रता समता के माहौल से हमारी स्वामता की संरक्षित बिंदु जिसका उदाहरण सबसी गाला मन्दिर में एक विशेष आमु वर्ग की अदिलादी के सिफ्ट उनके 'मैन्स्ट्रूल साइडिल' के बरत अद्वृत मानकर मन्दिर में प्रवेश से निषेध लैंगिक सामाजिक संरचना का अंग है जिसे सुप्रीम कोर्ट द्वारा मन्दिर में प्रवेश निषेध की उस्सर्वेषानिन्दा द्वारा औ समानता के अधिकार (अनुच्छेद-14) की रक्षा की।

इसी तरह SC के सीना में अदिलादी की पुरुषों के बराबर उमंड देना न्याय की सुनिश्चित तर वैश्वित्रु अधिकार के साथ 'अदिलादी' की पुरुषों से अन्तर छोड़ने के कठिनादी सोम की पीढ़ी छोड़ दिया।

अविलगत सामाजिक स्वतंत्रता व स्वामता की सुनिश्चित रक्षा के अदिला संरक्षितकरण के लिये अकार द्वारा भी अमु प्रमाण दिये गए। लैंगिक संरचनाओं सामाजिक संरचना के नियंत्रण की लोड सकारान्त भेदभाव के माहौल से सामाजिक संरचना में परिवर्तन होने लिंगानुपात में सुधार करके होने

क्षमी क्षाढ़ी वेरी पढ़ाओं की शुरूआत। 'वेरी वोक्स
नहीं समृद्धि है' की पत्रिका रिजिस्ट्रेशन हेतु 'कल्या
विहा अन' की शुरूआत की। आरी की अफ्फन
शुरूआत के प्रशिक्षण हेतु 'स्कूली के मार्गसिद्धी आर्ट'
का प्रशिक्षण दिना जाने लगा। मेरे बदलाव लिंग
की उस सामाजिक संरचना की चुनौती देकर
व्यक्तिगत स्वतन्त्रता व खामतता के आहगन
से सक्रियतरण कर व्याप्ति, समाज, स्वतन्त्रता
जैसे साम संवेदानिक वृत्ति की कृ के उद्देश्य
की अपेक्षाती प्रकान कर एक नये मुग का निर्माण
करत है।

परन्तु कही के साथ मेरे बदलाव जगीनी स्तर
पर भहसुस रही लोंगे जब हमे कार्यों का विभाजन
लिंग के आधार पर नहीं चमन के आधार पर
होगा। जहा महिलार शादी मेरे सिर्फ पक्षवान
व रंगारंग बार्मकभी लकु सीमित नहीं होगी वल्कि
प्रेषानुदान व भेदभानी की लिस्ट बनाने तक
विस्तीर्ण होगी।